नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 ईमेल-promgahv@gmail.com

---

हिन्दी विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में नए पाठ्यक्रमों की शुरुआत

पिछले कुछ वर्षों में, सन्दर्भ से अप्रासंगिक और अन्य संस्कृतियों के परिवेश से आयातित ज्ञान को ढोते रहने की प्रवृत्ति को लेकर एक नए तरह का विमर्श उठ खडा हुआ है। इस परिप्रेक्ष्य में महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग अपने माननीय कुलपति प्रोफ़ेसर गिरीश्वर मिश्र की प्रेरणा और संरक्षण में मनोविज्ञान को भारतीय समाज के लिए सांस्कृतिक और भाषायी रूप से संवेदनशील बनाने के लिए नवीन पाठ्यक्रमों की शुरुआत कर रहा है। ये पाठ्यक्रम हैं: **एम. फिल. मनोविज्ञान** और **एम. ए. मनोविज्ञान।** इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय स्तर पर योग के प्रशिक्षकों की बढ़ती हुयी मांग को देखते हुए योग और स्वास्थ्य अध्ययन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी आरंभ किया गया है। इन सभी पाठ्यक्रमों की पाठ्यचर्या आधुनिक समय मे रोजगार की संभावनाओं के अनुरूप तय की गयी है।

"हम मनोविज्ञान मे देशज परंपरा को सुदृढ़ बनाएँगे और देश के पीड़ित, दलित और वंचित वर्गों से संबन्धित मनोवैज्ञानिक शोध कार्य के नए मानदंड स्थापित करेंगे" कहते हुए मनोविज्ञान विभाग के प्रभारी डा. अरुण प्रताप सिंह और उनके साथी डा. अमित कुमार त्रिपाठी जी का अकादमिक उत्साह मन को उल्लसित कर देता है। मनोविज्ञान का देश और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप पुष्पन पल्लवन हो यह निश्चित रूप से सुखकारी होगा। आज के समय मे जब विशाल संख्या में हिन्दी बोलने और पढ़ने वाले विद्यार्थी वर्ग मनोविज्ञान के नए विचारों को समझने तथा उसके प्रगति में अपना योगदान देने के लिए लालायित हैं तब इस तरह के प्रयास अति प्रासंगिक हैं।यह पूछने पर कि विभागीय पाठ्यक्रमों मे रुचि रखने वाले कमजोर आर्थिक वर्गों के मेधावी विद्यार्थी भी इस अवसर से वंचित न हों, इसके लिए आप क्या करा रहे हैं, डा. अरुण प्रताप सिंह बताते हैं कि विश्वविद्यालय की ऐसे विद्यार्थियों से सहानुभूति है और यह विश्वविद्यालय ऐसे विद्यार्थियों को फ़ेलोशिप और अन्य माध्यमों से वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाता है।

इस विभाग के एम. फिल. के वर्तमान सत्र के कई विद्यार्थी गांधी जी के क्षमा, अहिंसा जैसे मूल्यों पर शोध कार्य कर रहे हैं। झुग्गी-झोपड़ियों मे रहने वाले किशोरों के मनोवैज्ञानिक पहलुओं को समझने के लिए एम. फिल. की विद्यार्थी प्रीति पटेल का संकल्प गांधी जी के द्वारा दिये गए देश के अंतिम आदमी के लिए कार्य करने के मंत्र को स्मरण करवा देता है। सुखद आश्चर्य की बात यह है कि यह मनोविज्ञान विभाग जिसकी औपचारिक स्थापना को अभी एक वर्ष भी नहीं पूरे हुए हैं उसमे एक राष्ट्री संगोष्ठी आधुनिक जीवन मे मूल्य-संकट विषय पर मार्च महीने मेन ही सम्पन्न हो चुकी है। इस विभाग मे स्वीडन के सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री प्रो. वेशलर, दिल्ली विश्वविद्यालय के डीन आफ इन्टरनेशनल अफेयर्स प्रो. आनंद प्रकाश, रींवा विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. उदय जैन और देश के सुप्रसिद्ध समाज शास्त्री प्रो. एस. एन. चौधरी विशिष्ट व्याख्यान दे चुके हैं। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्रजी, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात मनोवैज्ञानिक हैं, विद्यार्थियों की मार्गदर्शन कक्षाएं लेते हैं। वे विद्यार्थियों को शोध-कार्य को उपयुक्त बनाने के लिए सतत तत्पर रहते हैं।

विभाग के शोध कार्यों को विद्वत समुदाय तक पहुंचाने के लिए सहायक प्रोफेसर डा अमित कुमार त्रिपाठी जी के संपादकत्व मे एक राष्ट्रीय जर्नल भी प्रकाशित हो रहा है। हाल ही मे इस विभाग ने गांधी जी प्रिय शिष्य संत विनोबा जी योग से संबन्धित सर्वधर्मसमभाव से युक्त विचारों के प्रचार-प्रसार करने के लिए विनोबा योग मण्डल की स्थापना की है। आस-पास के परिवेश की के उत्थान हेतु परिवेश मंच के माध्यम से यह विभाग सक्रिय है। इसके द्वारा स्थापित संवाद मंच की गतिविधियां मनोवैज्ञानिक ज्ञान को अन्य ज्ञानानुशासनों से जुड़ने की अभीप्सा को दर्शाता है। निश्चित रूप से यह विभाग मनोवैज्ञानिक ज्ञान के विद्यार्थियों के लिए एक आदर्श अवसर उपलब्ध करवाता है जहां कि वे नए ज्ञान और देश के लिए एक बेहतर भविष्य रच सकें।